कक्षा - VI

पेड़ों के संग बढ़ना सीखो

1. कवि का पेड़ लगाने का स्वप्न पूरा क्यों नहीं हो पा रहा है?

उत्तर- कवि का पेड़ लगाने का स्वप्न इसलिए पूरा नहीं हो पा रहा है क्योंकि उनके पास अपनी ज़मीन नहीं है।

2. यदि कवि के पास थोड़ी-सी धरती होती तो वह क्या-क्या करता?

उत्तर- यदि कवि के पास थोड़ी-सी भी धरती होती तो वह उसपर एक हरा-भरा बगीचा विकसित करता, रंग-बिरंगे फूल लगाता और आशा करता कि उसके बगीचे में पक्षी चहचहाएँगे।

3. कौन इंसानों को बाँट रहे हैं?

उत्तर- लालच, अतृप्त तृष्णाएँ व आधुनिक सभ्यता इंसानों को बाँट रही हैं।

4. 'उस धरती में बाग-बगीचा, जो हो सके लगाऊँ।' पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- कवि की तीव्र इच्छा है कि अगर उसके पास थोड़ी-सी भी ज़मीन होती तो वे उसमें पेड़, पौधे व फूल लगायें और धरती के उस कोने को सुंदर बना सके।

5. 'वे दुष्कर्मों का फल चखते हैं।' कवि किन दुष्कर्मों की बात कर रहे हैं?

उत्तर- प्रकृति का संतुलन बिगाड़ना, वृक्षों को काटना और धरती को प्रदूषित करना, ये वो दुष्कर्म हैं, कवि जिनकी बात कर रहे हैं।

6.कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है? कवि हमसे किस बात की आशा कर रहे हैं?

उत्तर- यह कविता हमें प्रकृति का सम्मान करने की सीख देती है।

कवि के अनुसार, हमें प्रकृति का संतुलन नहीं बिगाड़ना चाहिए, बल्कि पेड़-पौधें लगाकर हरियाली बढ़ानी चाहिए, सुंदर बगीचे लगाने चाहिए और जीव-जंतुओं की भी रक्षा करनी चाहिए। हमें यह समझ लेना चाहिए कि प्रकृति है तो हम हैं।

कवि हमसे यही आशा करते हैं।

7.पेड़ों की शाखाएँ कटने पर पक्षी भोले शिशु की तरह क्यों रोते हैं?

उत्तर- पक्षी पेड़ों की शाखाओं पर ही अपना घोंसला बनाते हैं।और जब हम इन पेड़ों की शाखाओं को काट देते हैं, ये घोंसलें नष्ट हो जाते है, इसीलिए पक्षी शिशु की तरह रोते हैं।

8. कविता का प्रतिपाद्य लिखिए।

उत्तर- इस कविता में कवि प्रकृति के प्रति समर्पित है। उसका सपना है कि थोड़ी-सी ज़मीन लेकर वह पेड़-पौधें लगाए जिससे हरियाली फैले, और पक्षी चहचहाएं।

कवि चाहता है कि मानव हरियाली विस्तृत करें, औद्योगिकरण और शहरीकरण को नियंत्रित रखें तथा पेड़ों को न काटे। मानव को वृक्षों की भाँति बढ़ना व जड़े मज़बूत करना सीखना चाहिए। साथ ही यह भी समझना चाहिए कि यदि वह प्रकृति का हनन करेगा, तो उसका जीवित रहना कठिन हो जाएगा।

★भाव स्पष्ट कीजिए-

(i) छोटी-सी खेती हो, जो फसलों से दहक रही हो।

भावार्थ- प्रस्तुत पंक्ति में कवि एक ज़मीन के टुकड़े पर खेती कर फ़सल उगाना चाहता है।

(ii) एक-एक पत्ती पर हम सबके सपने सोते हैं।

भावार्थ- पेड़ों की पत्तियाँ हमारे लिए मूल्यवान हैं, व हमारे जीवन को मुमकिन करती हैं। इनसे हमें अन्न, औषधि, ताज़ी हवा, इत्यादि मिलते हैं।

★विकास के लिए पेड़ों को काटकर हम विनाश की ओर जा रहे हैं। इस कथन का अभिप्राय बताइए।

उत्तर- विकास के लिए पेड़ों को काटकर हम विनाश की ओर जा रहे हैं। यह कथन बिल्कुल सही है। अनियंत्रित औद्योगिकरण व शहरीकरण के कारण हम वनों को निर्ममता से काटते जा रहे हैं, जिसके कारण ऑक्सीजन की कमी हो रही है, वायु-प्रदूषण बढ़ रहा है। मृदा का कटाव हो रहा है, वन विलुप्त हो रहे है, जिनसे वन्य-जीवों का जीवन संकट में पड़ गया है। नीला आकाश धुआँ-धुआँ लगता है और हम ताज़ी हवा, साफ़ जल व चिड़ियों की चहचहाहट सुनने को तरसते हैं।

अगर हमें पृथ्वी और जीवन को बचाना है, तो वनों की रक्षा और प्रकृति का सम्मान करना ही होगा।

वृक्ष हैं तो जल है,

जल है तो जीवन है।

वृक्ष धरा के हैं आभूषण,

दूर करें यह प्रदूषण।

◆ तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए-

•बाग- बगीचा, उपवन, फुलवारी।

•वृक्ष- पेड़, तरु, विटप

•चिड़िया- परिंदा, खग, पक्षी

•तालाब- सरोवर, ताल, जलाशय।

◆दिए गए विशेष्य शब्दों के लिए उचित विशेषण लिखिए-

• *हरी-भरी* धरती

• *नटखट* शिशुओं

• *भीनी* खुशबू

• *कोमल* अंग

• *हरी* पत्ती

• *शांत* चौपाए

• *नवजात* शिशु

◆समझिये और लिखिए-

थोड़ी-सी *धरती*

थोड़ा-सा *पानी*

थोड़े-से *दाने*

छोटी-सी *क्यारी*

छोटा-सा *कमरा*

छोटे-से *बरतन*